'पेपर' को 'पास' में परिवर्तन करो...

जीवन में आई परीक्षा भागने का नहीं, लेकिन सागर जैसा बुलंद बन उनके सामने गर्जने का विषय है। परीक्षा को स्वशिखर हासिल करने का सोपान समझें। सिद्धि मार्ग कभी किसी के लिए निष्कलंक रहा ही नहीं है। फिसल जाते हैं, गिरते हैं, किन्तु उससे भयभीत होकर कभी भी जीवन का अंत करने का विचार न करें...

`हाँ, मैं एक चित्रकार हूँ, पेन्टिंग करना मेरा शौक है। एक दिन गीले हाथ से लाईट के स्वीच को टच किया। उस हाथ में करंट लगा। दूसरे हाथ की मदद ली तो दूसरा हाथ भी चिपक गया। मैं चिल्लाया, मम्मी दौड़कर आई। उन्होंने मुख्य स्वीच बंद किया और मैं बच गया। मैं अपना हाथ निष्क्रिय कर बैठा। मैंने अपनी आत्मा को बहुत दुःखी किया। मैंने अपनी अंतरात्मा को कहा: घटना महत्व की नहीं है, महत्व है उसके निराकरण की दृष्टि। आफत को अवसर में बदलने के लिए तुम्हें कौन रोकता है?

- ब्र. कु. गंगाधर

आज के लोकप्रिय गायक बंकिम पाढ़क, पैरों की अपंगता की प्रतीकूलता के कारण ने उनके जीवन को नई चुनौतियों का अवसर प्रदान किया। `हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा' नामक एक कार्यक्रम में उस बालकलाकार के कंठ के सुरीले आवाज़ पर विख्यात अभिनेता देवानंद आफरीन हो गये और बंकिम उत्तम गायक हो उसके लिए उनसे जितना हो सका उतना प्रोत्साहन दिया। बंकिम ने साधना और रियाज़ निरंतर चालू रखा और महान गायक बनने का उनका सपना साकार हुआ।

जीवन किसी को भी बोझिल होने नहीं देता; बहुत सारे लोग जीवन को बोझिल बना देते हैं। छोटे-छोटे दुःख, कठिनाइयाँ, अवरोध, आपत्तियाँ सम्मुख आती हैं, इसलिए हिम्मत के कच्चे लोग अस्थिर हो जाते हैं। निराशा, कुठा सोच और निरुत्साहिता उत्साह की कमर तोड़ने वाले गुप्त शत्रु हैं। हम मेहमानगिरी करते हैं तो वे जल्दी जाते नहीं हैं। प्रीत करने में मनुष्य बहुत बहादुर हैं; लेकिन भीति करने में सब लाचार। मस्ती में रहना है तो मन से पस्ती (व्यर्थ) को निकालना ही पड़ेगा। मनुष्य पैसे से खरीदे प्लॉट को सुंदर बनाने के लिए बगायात यानि फल-फूलों को बोता है, लेकिन कुदरत द्वारा दिये हुए मुफ्त, मबलख(प्रचुर), फलद्रुपता से भरपूर दिमाग रूपी प्लॉट को शुद्ध और सुंदर बनाने के लिए समय निकालने को तैयार नहीं है। ज़िन्दगी की ये भी एक विचित्रता और करुणता है। मन सद्विचारों से भरने की ईश्वर प्रदत्त तिजोरी है। हम इस तिजोरी का महत्व समझते नहीं हैं, इसलिए उसे निरर्थक वस्तुओं का संग्रह स्थान बना देते हैं। कुछेक उत्तम पुस्तक अपने जीवन को गढ़ने में सहायक होते हैं। हम जितना देवालय को महत्व देते हैं उतना ही महत्व ग्रंथालय का भी है। ग्रंथालय यानि जीवन गढ़ने का पंथालय, निःशब्द शब्दालय, अक्षर का आनंदालय।

बहुत बार मनुष्य ऐसी स्वनिर्धारित फरियाद करता है कि, मैंने किस घर में जन्म ले लिया है? `ये सर्विस मेरे लायक नहीं है', `ये मित्र और सगे-सम्बंधी निरर्थक हैं'। `दुर्जनों की बात सुनी जाती है, सज्जनों की उपेक्षा की जाती है।' आदि...आदि।

वास्तव में ऐसे विचारों वाले लोग ही विश्व के पावनतम वातावरण को नकारात्मक विचार युक्त प्रदूषण से प्रदूषित करते हैं। जगत को धिक्कार नहीं पुरस्कार दो, क्योंकि इस जगत में मेरा-तेरा-सबका अनगिनत उपकार है। दुःख बड़ा नहीं हुआ है, अ-सहनशक्ति ने दुःख को बड़ा बना दिया है। आप जहाँ हैं, वहाँ श्रेष्ठ बनने के लिए कुदरत ने भेजा है। मिली हुई नौकरी को आशीर्वाद दो, निष्ठा दो और कदरदानी की इच्छा किये बिगर कर्म का दीप जलाओ। विश्वास रखो कि आपका तप निरर्थक नहीं जाता। और मान लो कि आपका तप निरर्थक जा भी रहा है, तब भी आप अपना रोल उत्तम रीति से बजाते रहो। आपका संतोष और आनंद कोई छीन नहीं सकता।

कई बार दुःख ही नवसर्जन की भूमिका सर्जित करता है। नहीं तो `डाकू रत्नाकर' महर्षि वाल्मिकी कैसे हो सकता था? सिद्धि मार्ग कभी किसी के लिए निष्कलंक रहा ही नहीं है। फिसल जाते हैं, गिरते हैं, किन्तु उससे भयभीत होकर

- शेष पेज 8 पर

कुछ प्रश्नों के उत्तर दादी ने दिये इस अंदाज़ में...

प्रश्नः जब 1974 में दादी एक ठण्डे और भूरे शहर में आयीं तब कभी आपने कल्पना की थी कि 2016 में आपका 100वाँ जन्म दिन यहाँ मनाया जायेगा? और ब्रह्माकुमारीज़ के साथ आपके जीवन की जो उपलब्धियाँ, और ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव सारे विश्व भर में फैल जायेगा?

उत्तरः मैं तो कहूंगी कमाल उस बाप की है जिसने यह सब खेल रचा है। मुझे बाबा ने कहा था तुम सिर्फ शांत रहो, खुश रहो। सर्वशक्तिवान पिता परमात्मा ने क्या-क्या सेवायें कराई हैं, कैसे निमित्त बनाया है मेरे को फ्रेण्ड बनाने के लिए। मेरा वो फ्रेण्ड हो गया है। यह सिक्रेट बताती हूँ कि ऊपर वाला जो है ना, वो अपने को न्यारा रखता है परंतु मेरे जैसे भोले-भाले को अपना बना करके यह सब खेल रचा है।

प्रश्नः दादी जी, आपको क्या लगता है कि यह जो पाश्चात्य संस्कृति में पढ़े लिखे युवा भाई बहनें इस तरफ आकर्षित हुए तो उसमें आपके वायब्रेशन की शक्ति ने काम किया या फिर आप जो शब्दों में ज्ञान सुनाते थे, उसने जादू का काम किया?

उत्तरः मीठी बहन, मैं कहती हूँ मुझे ऐसा सेवासाथी मिले, वह मेरा साथ निभाये तो और क्या चाहिए। जैसे अभी उसने तेरे को टच किया है, उस ऊपर वाले की टचिंग ने तुमको शक्ति दी है, सारी सभा के बीच मेरे से इंटरव्यू लेने के लिए। यह भी प्रभु लीला है जो इंगलिश बहन..., कोई भारतवासी ने भी कभी मेरे से ऐसे लेन-देन नहीं की है।

प्रश्नः भले बाबा ने आपको निमित्त बनाया हो लेकिन आपको मेहनत तो करनी पड़ती है, 1970 में एक बहुत अलग सामाजिक व्यवस्था थी तो ऐसे में आपने कैसे विदेशी भाई-बहनों को आकर्षित किया जो भारतीय नहीं थे, जिनकी पृष्ठभूमि हिन्दू नहीं थी?

उत्तरः आप सवाल पूछ रही हो, मैं साक्षी होकर के, साक्षी माना ही क्या है, अंदर का सार है कि यह हरेक आत्माएं हैं। परमात्मा सर्वशक्तिवान है। तो मेरे दिल के अंदर यह भावना है, जैसे भगवान ने मुझे जीवन की वैल्यु का अनुभव कराया है ऐसे सब करें, यह संकल्प साकार हो गया है। विदेश सेवा से बाबा ने विश्व-कल्याणकारी बना दिया है। आपने कभी यह सोचा था कि आप मेरी ऐसे फ्रेण्ड बनेंगी और ऐसे सभा में हाज़िर होंगी! तेरा ये मिसाल है, ऐसे अनेकों का मिसाल है। चलते-फिरते कहाँ भी मिले, सिर्फ मुस्कराया है। यह मुस्कराहट मनुष्य में नवीनता लाती है। पराई बात पुरानी बात सुनना बोलना लाइफ की वैल्यु नहीं है। डिटैच एण्ड लविंग नेचर हो। दोनों ही हो।

प्रश्नः दादी जी कभी बोर नहीं होती हैं, सदा उमंग में रहती हैं, कमाल है इनका जो उमंग है वो औरों में उमंग पैदा करता है, इसका क्या राज़ है?

उत्तरः हिम्मत और उमंग में क्या फर्क है, वो बताओ। तुम बहुत अच्छी हो क्योंकि एक-एक शब्द जो बोल रही हो। हिम्मत हो, उमंग न हो तो उनकी भगवान से नहीं बनती है। दूसरी बात उमंग हो, उत्साह नहीं हो, उमंग-उत्साह में भी फर्क है। उमंग है तो कहेंगे हाँ हाँ ठीक है पर उत्साह है तो कर सकते हैं, वह करा भी देता है। सच्ची दिल है साहब राज़ी है। जब यह ग्लोबल हाऊस बनना शुरु हुआ तब हमारे पास एक लाख पाउण्ड भी नहीं था, और चाहिए था कम से कम 4 मिलीयन। वहाँ बाबा का फोटो था, किसी भाई व बहन को कहा रोज़ मेडिटेशन करो यहाँ, भले काम करने वाले काम कर रहे हैं, आप वहाँ योग करो। यह कैसे हाऊस तैयार हुआ, मैं साक्षी होकर देखती हूँ... इतना बड़ा हॉल बनेगा, यह सेवा करेगा... यहाँ जो पहले रिसेप्शन है ना, वो बाबा साकार में जब था तो वो सीढ़ी और नीचे मिलना, वो इतना पॉवरफुल था, तो हमने भी उस एरिया को उस सीढ़ी को बड़ा महत्व दिया।

इस्ट वेस्ट दोनों मिल गये, दुनिया का कोई कोना नहीं रहा है जहाँ कोई बाबा का बच्चा नहीं हो। अभी इन जैसी एक दर्जन बहनें मिल जायें तो...। आपेही टचिंग आयेगी, तुम्हारे में वो सच्चाई और प्रेम की आकर्षण हो जो सबके दिलों के अंदर चली जावे। तो मैं कहूंगी तुम बाबा का राइट हैण्ड हो, मैं लेफ्ट हैण्ड हूँ क्योंकि अभी देखो तुम मेरे राइट साइड बैठी हो ना! अभी आप सब ऊपर वाले से शक्ति खींचो, कौन सी शक्ति है जो लाइट बनाती है, माइट देती है। इतनी लाइट कि यह शरीर है, पर लाइट मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा। बाकी यह सब कौन हैं? मैं उसकी हूँ वो मेरा है। भगवान मेरा साथी है और वो कहता है तुम सिर्फ ऐसे ही रहो, स्वीट साइलेंस में रहो। तो साइलेंस स्वीट बनाती या स्वीट साइलेंस...? आज की यह रूहरिहान सबको बहुत अच्छी लगी ना, अच्छा लगना माना ज्ञान सहज लगा, तो कम से कम अपना खाना पीना शुद्ध रखना। अपने मन में जो ख्यालात आते हैं वो देखो, चिंतन ऐसे हो, कोई चिंता नहीं। शुभ चिंतन हो। श्रेष्ठ संकल्प गुप्त सेवा करता है। तो मुझे इस बारी वंडर लगा है, हमारे बाबा का जो यह ज्ञान है 40 साल पहले भारत चाहे यहाँ, थोड़ा मानने में टाइम लगाते थे, अभी टाइम नहीं लगाते हैं। ज्ञान को सहज कर दिया है, लाइफ में लाया है। यह ज्ञान औरों के लिये मिसाल बन करके प्रेरणा देने वाला हो गया है। योग का जो बल मिलता है वो प्रैक्टिकल लाइफ में अच्छे कर्म कराता है, जो कुछ पास्ट में थोड़ा गलत हो गया था वो भगवान ने माफ किया, खुद के रियलाइज़ेशन से चेंज हो गया। रीयल बात जीवन में तब आती है जब जीवन में रीयल्टी आती है। रियलाइज़ेशन से रियलाइज़ होता है अंदर कि यह राइट है, वही करना है। यह रॉंग है तो यह नहीं करना है। ओ.के.।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

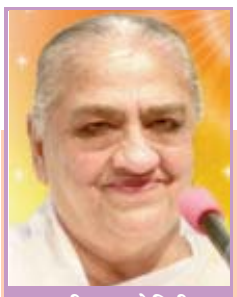

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सारे सम्बन्ध यदि हों बाबा से, तो योग भी होगा सहज

तपस्या ही हमारे ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। इसी तपस्या को हम सहज योग कहते हैं। और योग का अर्थ याद है। हमने देखा कि तपस्या शक्तिशाली भी है तो सहज भी है। तो पहले हम अपने आपमें चेक करें कि सचमुच हम जो कहते हैं सहज योगी, वह सहज अनुभव होता है? अगर योग कभी सहज, कभी मुश्किल अनुभव होता है तो मुश्किल के समय क्या हम योगी हैं या योद्धे हैं? जब कोई बात होती है तब योग में युद्ध चलती है तो क्या वह सहज योग हुआ? ब्राह्मण जीवन में चेक करना है कि क्या मैं सदा योगी जीवन में रहता हूँ या कभी योगी जीवन में, कभी योद्धे जीवन में? योग माना बाबा की याद निरंतर नहीं है तो उसको योगी जीवन नहीं कहा जायेगा। योग लगाने वाला कह सकते हैं, योगी जीवन वाला नहीं। जब तक शरीर में हैं तब तक जीवन में हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि एक घण्टा जीवन नहीं है बाकी जीवन है। तो योगी जीवन का अर्थ यही है कि निरंतर हमारा योग सहज रहे। योग सहज तब हो सकता है, तपस्या तब सफल हो सकती है जब हमारा बाप से सच्चा प्यार है। बाबा का हमसे प्यार है उसका सबूत है जब कोई भी परिस्थिति आती है और दिल से बाबा को याद करते हैं तो बाबा उसी समय प्रत्यक्षफल देता है। बाबा का प्यार हमसे है लेकिन हमारा भी इतना ही प्यार बाबा से है? प्यार ऐसी चीज़ होती है जो उसकी याद भुलाना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। हमारे एक से ही सर्व सम्बन्ध हैं -इसलिए याद सहज है। अगर एक भी सम्बन्ध हमारा बाबा से कम है तो निरंतर योग कभी नहीं रह सकता। कभी-कभी ऐसे होता है कि बाबा का जो मुख्य सम्बन्ध है, बाप, टीचर, सद्गुरू का वो तो ठीक है लेकिन फ्रैन्ड के सम्बन्ध की, मैं सीता हूँ वो राम है -लगता है इन सम्बन्धों की क्या आवश्यकता है? लेकिन देखने में आता है कि कोई भी रास्ता बुद्धि के जाने का होता है और बुद्धि न जावे -ये हो ही नहीं सकता। जब ट्रेन आने वाली होती है तो भल रास्ता बंद करते हैं लेकिन स्कूटर वाले, साइकिल वाले रुकते नहीं, नीचे से चले जाते हैं। यहाँ भी मन बहुत फास्ट जाता है। कहाँ न कहाँ से रास्ता निकाल लेता है। बाबा से यदि कोई एक सम्बन्ध भी अनुभव में नहीं है, कहने में तो कह देते हैं सर्व सम्बन्ध बाबा से हैं, एक ही बाबा हमारा संसार है लेकिन प्रैक्टिकल में कोई भी दैहिक सम्बन्ध में हमारा लगाव है और बाबा से हमारे सर्व सम्बन्ध नहीं हैं तो हमारी तपस्या कभी भी सिद्ध नहीं हो सकती। इसलिए तपस्या को शक्तिशाली और निरंतर बनाने के लिए बाबा से सर्व सम्बन्ध ज़रूरी है।